ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL**04292**
RNI REG. NO. UPBIL/**2014/66218** **PP. No.- 183-185**
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.- IV, Issues-38, YEAR- Oct.-Dec.2025

नागार्जुन के उपन्यासों में स्त्री पात्र

फरहत नवी, 2. प्रो. (डॉ.) उमेश कुमार सिंह

शोध अध्येता, 2. सह–प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, जे.एस. विश्वविद्यालय, शिकोहाबाद– फिरोजाबाद (उ0प्र0) भारत

Received-29.11.2025, Revised-07.12.2025, Accepted-13.12.2025 **E-mail: aaryvart2013@gmail.com**

सारांशः ***हिन्दी साहित्य के प्रगतिशील कथाकार नागार्जुन ने अपने उपन्यासों में भारतीय समाज के उपेक्षित, शोषित और संघर्षशील वर्गों के साथ–साथ स्त्री जीवन की जटिलताओं का अत्यन्त यथार्थ चित्रण किया है। उनके स्त्री पात्र केवल करुणा के प्रतीक नहीं हैं, बल्कि सामाजिक अन्याय, पितृसत्तात्मक व्यवस्था, आर्थिक विषमता और रूढ़ियों के विरुद्ध संघर्ष करने वाली चेतनाशील व्यक्तित्व हैं। नागार्जुन ने ग्रामीण समाज की स्त्रियों की पीड़ा, असुरक्षा, आत्मसम्मान, श्रमशीलता तथा जीवन–संघर्ष को अत्यंत संवेदनशीलता के साथ अभिव्यक्त किया है। उनके उपन्यासों में स्त्री पात्र सामाजिक व्यवस्था के शिकार होने के बावजूद आत्मबल, नैतिक शक्ति तथा मानवीय मूल्यों का परिचय देते हैं। प्रस्तुत शोध लेख में रतिनाथ की चाची, बलचनमा, दुःखमोचन, कुम्भीपाक, उग्रतारा तथा वरुण के बेटे जैसे उपन्यासों के प्रमुख स्त्री पात्रों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि नागार्जुन स्त्री को केवल परिवार की सदस्य या पुरुष के पूरक के रूप में नहीं देखते, बल्कि उसे समाज परिवर्तन की सक्रिय शक्ति के रूप में स्थापित करते हैं।***

कुंजीभूत शब्द– नागार्जुन, उपन्यास, स्त्री पात्र, नारी चेतना,सामाजिक यथार्थ,प्रगतिशील साहित्य, पितृसत्तात्मक व्यवस्था, बलचनमा।

प्रस्तावना– हिन्दी उपन्यास साहित्य में नागार्जुन का नाम उन साहित्यकारों में प्रमुखता से लिया जाता है जिन्होंने साहित्य को समाज की वास्तविक समस्याओं से जोड़ते हुए उसे जनजीवन का सशक्त माध्यम बनाया। उनका साहित्य भारतीय ग्रामीण जीवन, सामाजिक विषमता, आर्थिक शोषण, जातिगत असमानता, राजनीतिक विडम्बनाओं तथा मानवीय संघर्षों का प्रामाणिक दस्तावेज माना जाता है। नागार्जुन ने अपने उपन्यासों में केवल घटनाओं का वर्णन नहीं किया, बल्कि समाज के उन वर्गों को साहित्य का केन्द्र बनाया जिन्हें मुख्यधारा के साहित्य में अपेक्षित स्थान नहीं मिल पाया था। किसानों, मजदूरों, दलितों, वंचितों और स्त्रियों के जीवन–संघर्ष को उन्होंने अत्यन्त संवेदनशीलता और यथार्थपरक दृष्टि से चित्रित किया। यही कारण है कि उनका कथा साहित्य सामाजिक यथार्थवाद और प्रगतिशील चेतना का उत्कृष्ट उदाहरण माना जाता है।

भारतीय समाज की संरचना लंबे समय तक पितृसत्तात्मक व्यवस्था पर आधारित रही है, जिसके कारण स्त्रियों को अनेक सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक असमानताओं का सामना करना पड़ा। शिक्षा, संपत्ति, निर्णय लेने के अधिकार तथा सामाजिक स्वतंत्रता जैसे अनेक क्षेत्रों में स्त्रियाँ पुरुषों की तुलना में वंचित रही हैं। विशेषकर ग्रामीण समाज में स्त्री का जीवन अनेक प्रकार की रूढ़ियों, परम्पराओं और सामाजिक बंधनों से प्रभावित रहा है। बाल विवाह, विधवा जीवन, दहेज प्रथा, जातिगत भेदभाव, आर्थिक पराधीनता तथा लैंगिक असमानता जैसी समस्याओं ने स्त्री जीवन को अत्यन्त जटिल बना दिया। नागार्जुन ने इन सामाजिक यथार्थों को अपने उपन्यासों में अत्यन्त प्रामाणिक रूप से प्रस्तुत किया है। उनकी दृष्टि केवल स्त्री की पीड़ा तक सीमित नहीं रहती, बल्कि वे उन सामाजिक संरचनाओं का भी विश्लेषण करते हैं जो स्त्री के शोषण और असमानता को जन्म देती हैं।

नागार्जुन के उपन्यासों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उनके स्त्री पात्र केवल सहानुभूति के पात्र नहीं हैं, बल्कि वे अपने व्यक्तित्व, आत्मसम्मान और संघर्षशीलता के कारण पाठकों पर गहरी छाप छोड़ते हैं। उनकी नारी पात्र परिस्थितियों के सामने पूर्णतः समर्पण नहीं करतीं, बल्कि सीमित संसाधनों और सामाजिक प्रतिबंधों के बीच भी अपने अस्तित्व, स्वाभिमान और मानवीय गरिमा की रक्षा करने का प्रयास करती हैं। लेखक ने स्त्री के मनोवैज्ञानिक पक्ष, उसकी संवेदनाओं, उसके अंतर्द्वन्द्व तथा उसकी सामाजिक स्थिति का अत्यन्त सूक्ष्म और यथार्थ चित्रण किया है। यही कारण है कि उनके उपन्यासों की स्त्रियाँ केवल साहित्यिक पात्र नहीं रह जातीं, बल्कि भारतीय समाज की वास्तविक स्त्रियों का प्रतिनिधित्व करती प्रतीत होती हैं।

नागार्जुन की साहित्यिक दृष्टि मूलतः मानवतावादी एवं प्रगतिशील है। वे स्त्री और पुरुष के बीच समानता, सम्मान तथा सामाजिक न्याय की स्थापना के पक्षधर हैं। उनके उपन्यासों में स्त्री को केवल परिवार की मर्यादा तक सीमित नहीं रखा गया है, बल्कि उसे सामाजिक परिवर्तन की सक्रिय शक्ति के रूप में चित्रित किया गया है। 'रतिनाथ की चाची' की गौरी, 'कुम्भीपाक' की निर्मला, 'वरुण के बेटे' की मधुरी तथा अन्य स्त्री पात्र अपने जीवन के संघर्षों के माध्यम से यह सिद्ध करते हैं कि स्त्री केवल त्याग और सहनशीलता की प्रतिमूर्ति नहीं है, बल्कि वह विवेक, साहस, श्रम और आत्मनिर्भरता की भी प्रतीक है। इन पात्रों के माध्यम से नागार्जुन भारतीय समाज में व्याप्त लैंगिक असमानताओं, नैतिक पाखण्ड तथा सामाजिक रूढ़ियों की तीखी आलोचना करते हैं।

समकालीन नारी विमर्श के संदर्भ में नागार्जुन के उपन्यासों का अध्ययन विशेष महत्व रखता है। यद्यपि उनका साहित्य आधुनिक स्त्रीवादी सिद्धान्तों के विकसित होने से पूर्व लिखा गया, फिर भी उसमें स्त्री अस्मिता, सामाजिक न्याय, समान अवसर, आत्मसम्मान तथा स्वतंत्र अस्तित्व जैसे अनेक प्रश्न अत्यन्त प्रभावशाली ढंग से उपस्थित होते हैं। उनके स्त्री पात्र विद्रोह की घोषणा कम करते हैं, किन्तु अपने व्यवहार, संघर्ष और आत्मविश्वास के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन की दिशा में महत्त्वपूर्ण संकेत देते हैं। इस दृष्टि से नागार्जुन का साहित्य भारतीय नारी चेतना के विकास को समझने का एक महत्त्वपूर्ण स्रोत माना जा सकता है।

प्रस्तुत शोध लेख का उद्देश्य नागार्जुन के प्रमुख उपन्यासों में चित्रित स्त्री पात्रों का समग्र एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन करना है। इसके अंतर्गत उनके स्त्री पात्रों के व्यक्तित्व, सामाजिक स्थिति, संघर्ष, आत्मसम्मान, पारिवारिक भूमिका, आर्थिक परिस्थितियों तथा नारी चेतना के विभिन्न आयामों का विवेचन किया गया है। साथ ही यह भी स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि नागार्जुन ने अपने उपन्यासों के माध्यम से भारतीय समाज में स्त्री की वास्तविक स्थिति को किस प्रकार अभिव्यक्त किया तथा सामाजिक परिवर्तन की दिशा में उनकी क्या वैचारिक भूमिका रही। इस अध्ययन से यह समझने में सहायता मिलती है कि नागार्जुन का कथा साहित्य केवल साहित्यिक उपलब्धि नहीं, बल्कि भारतीय समाज में स्त्री के सम्मान, समानता और मानवीय गरिमा की स्थापना की एक सशक्त वैचारिक पहल भी है।

हिन्दी उपन्यास परम्परा में नागार्जुन का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। उन्होंने अपने कथा साहित्य के माध्यम से ग्रामीण भारत के यथार्थ, वर्ग–संघर्ष, आर्थिक विषमता, जातिगत भेदभाव तथा स्त्री जीवन की पीड़ाओं को सशक्त अभिव्यक्ति प्रदान की। प्रेमचन्द के बाद

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.- IV, Issues-38, YEAR- Oct.-Dec.2025

यदि किसी कथाकार ने भारतीय गाँवों के जीवन को सबसे अधिक यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया, तो वह नागार्जुन हैं। उनका साहित्य केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं बल्कि सामाजिक परिवर्तन का दस्तावेज है।[1]

नागार्जुन के उपन्यासों में स्त्री पात्र जीवन की कठोर परिस्थितियों से संघर्ष करते दिखाई देते हैं। वे सामाजिक बन्धनों, धार्मिक रूढ़ियों तथा पुरुष प्रधान व्यवस्था का सामना करते हुए अपने अस्तित्व की रक्षा करते हैं। उनकी नारी न तो पूर्णतः विद्रोही है और न ही पूरी तरह समर्पितय बल्कि वह परिस्थितियों के बीच आत्मसम्मान और मानवीय गरिमा को बनाए रखने का प्रयास करती है। यही कारण है कि उनके स्त्री पात्र आज भी प्रासंगिक प्रतीत होते हैं।

नागार्जुन की स्त्री–दृष्टि– नागार्जुन की स्त्री–दृष्टि मानवीय, यथार्थवादी और प्रगतिशील है। उन्होंने स्त्री को केवल सौन्दर्य या प्रेम की वस्तु के रूप में चित्रित नहीं किया, बल्कि उसके श्रम, संघर्ष, पीड़ा और सामाजिक स्थिति को साहित्य का केन्द्र बनाया। उनके अनुसार स्त्री की वास्तविक समस्या केवल आर्थिक नहीं, बल्कि सामाजिक एवं सांस्कृतिक भी है। इसलिए उनके उपन्यासों में स्त्री के शोषण के साथ–साथ उसके आत्मसम्मान और संघर्ष की कथा भी समान रूप से उपस्थित रहती है।[2]

उनकी दृष्टि में स्त्री समाज परिवर्तन की आधारशिला है। वे यह स्पष्ट करते हैं कि जिस समाज में स्त्री सम्मानित नहीं होगी, वहाँ वास्तविक सामाजिक प्रगति सम्भव नहीं है।

रतिनाथ की चाची की गौरी रू शोषण और आत्मबल का प्रतीक– रतिनाथ की चाची नागार्जुन का सर्वाधिक चर्चित उपन्यास है। इसकी नायिका गौरी भारतीय विधवा स्त्री के जीवन की त्रासदी का प्रतिनिधित्व करती है। पति की मृत्यु के बाद वह सामाजिक उपेक्षा, पारिवारिक शोषण तथा यौन उत्पीड़न का शिकार बनती है। उसके साथ अन्याय होने के बावजूद समाज उसी को दोषी ठहराता है। यह स्थिति भारतीय पितृसत्तात्मक व्यवस्था की कठोरता को उजागर करती है।[3]

गौरी का चरित्र करुणा से भरपूर होने के बावजूद अत्यन्त दृढ़ है। वह जीवन की कठिन परिस्थितियों में भी आत्मसम्मान बनाए रखती है। नागार्जुन उसके माध्यम से यह सिद्ध करते हैं कि स्त्री की महानता उसके त्याग में नहीं, बल्कि विपरीत परिस्थितियों में भी मानवीय मूल्यों को बनाए रखने में है।

बलचनमा में स्त्री जीवन का यथार्थ– बलचनमा मुख्यतः किसान जीवन का उपन्यास है, किन्तु इसमें ग्रामीण स्त्रियों की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यहाँ स्त्रियाँ खेतों में श्रम करती हैं, परिवार का पालन–पोषण करती हैं तथा आर्थिक संकटों का सामना करती हैं। वे पुरुषों के समान परिश्रम करती हैं, परन्तु सामाजिक सम्मान उनसे कोसों दूर रहता है।[4]

नागार्जुन ने ग्रामीण स्त्री के श्रम को साहित्यिक गरिमा प्रदान की है। उनके अनुसार भारतीय कृषि व्यवस्था की वास्तविक आधारशिला ग्रामीण स्त्रियाँ हैं, किन्तु इतिहास और समाज दोनों ने उनके योगदान की उपेक्षा की है।

कुम्भीपाक की निर्मला रू सामाजिक बन्धनों के विरुद्ध चेतना– कुम्भीपाक में निर्मला का चरित्र स्त्री चेतना का प्रतिनिधित्व करता है। वह सामाजिक अन्याय और नैतिक पाखण्ड के विरुद्ध खड़ी होती है। नागार्जुन यह दिखाते हैं कि स्त्री की समस्याओं का मूल कारण केवल व्यक्तिगत नहीं बल्कि सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्था है। निर्मला शिक्षा, आत्मसम्मान तथा स्वतंत्र विचारों की पक्षधर है। उसके माध्यम से लेखक स्त्री की स्वायत्त पहचान का समर्थन करते हैं।[5]

वरुण के बेटे की मधुरी रू संघर्ष और आत्मनिर्भरता– वरुण के बेटे की मधुरी ग्रामीण स्त्री के आत्मनिर्भर व्यक्तित्व का प्रतिनिधित्व करती है। वह कठिन परिस्थितियों में भी परिवार और समाज के प्रति अपने दायित्वों का निर्वाह करती है। उसका चरित्र यह सिद्ध करता है कि भारतीय स्त्री केवल संवेदनशील नहीं बल्कि अत्यन्त कर्मठ और संघर्षशील भी है। नागार्जुन ने मधुरी के माध्यम से स्त्री के सामाजिक उत्तरदायित्व और नैतिक दृढ़ता को प्रतिष्ठित किया है।[6]

दुःखमोचन एवं उग्रतारा की स्त्रियाँ– दुःखमोचन तथा उग्रतारा में भी स्त्री पात्र समाज की रूढ़ियों और असमानताओं से संघर्ष करते दिखाई देते हैं। ये पात्र यह स्पष्ट करते हैं कि स्त्री की सबसे बड़ी शक्ति उसका धैर्य, श्रम और मानवीय संवेदना है। नागार्जुन ने इन स्त्रियों को दया की पात्र नहीं बनाया बल्कि उन्हें संघर्षशील व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत किया है। वे पुरुषों की अपेक्षा अधिक नैतिक और मानवीय दिखाई देती हैं।[7]

नागार्जुन के स्त्री पात्रों की प्रमुख विशेषताएँ– नागार्जुन के स्त्री पात्रों में अनेक विशिष्ट गुण दिखाई देते हैं:

- सामाजिक अन्याय के विरुद्ध संघर्ष की भावना।
- आत्मसम्मान एवं नैतिक दृढ़ता।
- श्रमशीलता और आत्मनिर्भरता।
- पारिवारिक उत्तरदायित्व का निर्वहन।
- पितृसत्तात्मक व्यवस्था के विरुद्ध मौन प्रतिरोध।
- मानवीय संवेदना एवं करुणा।
- सामाजिक परिवर्तन की चेतना।
- यथार्थवादी एवं जीवन–सापेक्ष व्यक्तित्व।

इन विशेषताओं के कारण नागार्जुन के स्त्री पात्र हिन्दी उपन्यास परम्परा में विशिष्ट स्थान रखते हैं।

नारी विमर्श की दृष्टि से मूल्यांकन– समकालीन नारी विमर्श की दृष्टि से नागार्जुन के उपन्यास अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। यद्यपि उन्होंने आधुनिक स्त्रीवादी सिद्धान्तों का प्रत्यक्ष प्रयोग नहीं किया, फिर भी उनके स्त्री पात्र स्त्री अस्मिता, लैंगिक समानता, सामाजिक न्याय तथा मानवीय अधिकारों की स्थापना करते हैं। उनकी नारी पात्र पुरुष विरोध नहीं करतीं, बल्कि अन्याय का विरोध करती हैं। यही उनकी प्रगतिशीलता है।[8]

नागार्जुन स्त्री को समाज की सक्रिय परिवर्तनकारी शक्ति के रूप में देखते हैं। उनके पात्र यह संदेश देते हैं कि सामाजिक विकास तभी सम्भव है जब स्त्री को समान सम्मान, शिक्षा, आर्थिक अवसर तथा निर्णय लेने की स्वतंत्रता प्राप्त हो।

निष्कर्ष– नागार्जुन के उपन्यासों के स्त्री पात्र हिन्दी साहित्य की अमूल्य धरोहर हैं। उन्होंने भारतीय स्त्री के जीवन–संघर्ष, पीड़ा, श्रम, आत्मसम्मान तथा सामाजिक चेतना का अत्यन्त यथार्थ और संवेदनशील चित्रण किया है। उनके स्त्री पात्र केवल शोषित वर्ग का प्रतिनिधित्व नहीं करते, बल्कि सामाजिक परिवर्तन के वाहक भी हैं। गौरी, निर्मला, मधुरी तथा अन्य पात्र यह सिद्ध करते हैं कि स्त्री की वास्तविक शक्ति उसके साहस, आत्मविश्वास और मानवीय मूल्यों में निहित है। आज के नारी विमर्श के संदर्भ में भी नागार्जुन के

उपन्यास अत्यन्त प्रासंगिक हैं, क्योंकि वे स्त्री को समानता, न्याय और गरिमा के साथ देखने की प्रेरणा देते हैं। इस दृष्टि से नागार्जुन हिन्दी साहित्य में स्त्री जीवन के सबसे यथार्थवादी और प्रगतिशील कथाकारों में प्रमुख स्थान रखते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. नागार्जुन. रतिनाथ की चाची. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. नागार्जुन. बलचनमा. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. नागार्जुन. कुम्भीपाक. राजपाल एंड संस, नई दिल्ली।
4. नागार्जुन. वरुण के बेटे. राजपाल एंड संस, नई दिल्ली।
5. नागार्जुन. दुःखमोचन. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. नागार्जुन. उग्रतारा. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
7. रेखा पाण्डेय. "नागार्जुन के साहित्य में स्त्री"।
8. "नागार्जुन के उपन्यासों में नारी सम्बन्धी समस्याएँ : एक अध्ययन"।
9. "प्रेमचन्द एवं नागार्जुन के उपन्यासों में स्त्रियों की दशा एवं दिशा"।

*****